Subject :- Sociology Date :- 24/04/2020
Class :- D-I (H) Paper :- Ist & Subsidiary
Topic :- सामाजिक परिवर्तन और इसकी विशेषताएँ
By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher, Marwari College, Darbhanga
Online Study Material No :- (17)

सामाजिक परिवर्तन

विषय प्रवेश → परिवर्तन प्रकृति का एक शास्वत एवं अटल नियम है। हम चाहे या न चाहें समाज में परिवर्तन होगा ही। समाज की इस प्रकृति को स्वीकार करते हुए MacIver & Page ने अपनी पुस्तक 'Society' में लिखा है कि "समाज परिवर्तनशील और गत्यात्मक है।" Kingsley Davis ने भी अपनी पुस्तक 'Human Society' में लिखा है कि "... अन्य तथ्यों के समान ही सभी समाज बिना रुके हुए निरंतर परिवर्तित होते रहते हैं।" Anderson & Parker ने भी लिखा है कि "सभी समाजों में सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न होता है।" इसका अर्थ यह है कि सामाजिक परिवर्तन एक सार्वभौमिक घटना (Universal Phenomenon) है और कोई भी समाज परिवर्तन की प्रक्रिया से अछूता नहीं है। यह हो सकता है कि भिन्न-भिन्न समाजों में परिवर्तन की गति, दिशा एवं स्वरूपों में अन्तर हो, किंतु इतिहास इस बात का साक्षी है कि प्रत्येक समाज परिवर्तन के दौर से गुजरता जा रहा है।

सामाजिक परिवर्तन का अर्थ और परिभाषाएँ

सामान्यतः सामाजिक परिवर्तन का तात्पर्य समाज में घटित होने वाले परिवर्तन से है। कुछ विद्वान ने सामाजिक सम्बन्धों में होने वाले परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहा है। इसमें MacIver & Page का नाम उल्लेखनीय है। इन्होंने सामाजिक परिवर्तन को परिभाषित करने के क्रम में लिखा है कि "सामाजिक परिवर्तन से हमारा तात्पर्य सामाजिक सम्बन्धों में होने वाला परिवर्तन है।" अर्थात् जब कभी भी सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन होगी तो उसे ही हम सामाजिक परिवर्तन कहेंगे। (Our direct concern is Sociologist is with Social relationsheep, It is the change in these which done we shall regard as Social change)

K. Davis के अनुसार "सामाजिक परिवर्तन से अभिप्राय उन परिवर्तनों से है जो सामाजिक संगठन अर्थात् समाज की संरचना और प्रकार्यों में उत्पन्न होते हैं।" (By Social change is meant only such alterations as occur is Social organization - that is the structure & functions of Society. इस परिभाषा से स्पष्ट होता है कि सामाजिक परिवर्तन सामाजिक संगठनों में होने वाले परिवर्तनों से है। सामाजिक संरचना में परिवर्तन का तात्पर्य समाज की विभिन्न

Scanned with CamScanner

इकाइयों जैसे संस्था, समिति, समुदाय, समूह, प्रस्थिति, भूमिका, सामाजिक प्रतिमान आदि में परिवर्तन से है एवं इसके प्रकार्यों में भी परिवर्तन से है।

Ginsberg, Johnson, Bottomore, Ramond Firth इत्यादि विद्वानों ने भी सामाजिक ढाँचे में होने वाले परिवर्तन को ही सामाजिक परिवर्तन कहा है।

Johnson "अपने मूल अर्थ में सामाजिक परिवर्तन का तात्पर्य सामाजिक ढाँचे में परिवर्तन है।"

Gillin & Gillin "सामाजिक परिवर्तन का अर्थ जीवन की स्वीकृत विधियों में होने वाले परिवर्तनों से है, चाहे ये परिवर्तन भी भौगोलिक, सांस्कृतिक, जनसंख्या या विभिन्न सिद्धांतों के कारण हो अथवा एक समूह में अविष्कार या संस्कृति के प्रसार से उत्पन्न हुए हों।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट हो रहा है कि सामाजिक परिवर्तन मानवीय सम्बन्धों, व्यवहारों, संस्थाओं, प्रथाओं, परिस्थितियों, कार्यविधियों, आदर्शों, मूल्यों, सामाजिक संरचना एवं प्रकार्यों में होने वाला परिवर्तन है।

सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएँ :—

सामाजिक परिवर्तन की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :

(1) सार्वभौमिक → सार्वभौमिक का अर्थ सामाजिक परिवर्तन सार्वभौम है अर्थात यह प्रत्येक समाज में, प्रत्येक समय में और प्रत्येक जगह पायी जाती है।

(2) सामाजिक प्रकृति → सामाजिक परिवर्तन पूरे समाज के ढाँचे और प्रकार्यों में परिवर्तनों की प्रकृति से है न कि व्यक्तिगत परिवर्तनों से।

(3) दर → सामाजिक परिवर्तन की दर किसी समाज में तीव्र तो किसी में धीरे-धीरे या आस्ते-आस्ते होते ही रहती है।

(4) तीव्र व मंद → एक ही समाज में कभी तेज रूप से सामाजिक परिवर्तन होती है तो कभी मंद रूप से। उदाहरणार्थ- आजादी से पूर्व भारतीय समाज में परिवर्तन की दर मंद थी किंतु आज इस समाज में बहुत तेजी से परिवर्तन हो रहा है।

(5) P.A. Sorokin के अनुसार सामाजिक परिवर्तन घटती-बढ़ती या उतार-चढ़ाव के सिद्धांत (Principal of fluctions) के आधार पर होता है।

(6) सामाजिक परिवर्तन कभी एक रेखीय तो कभी बहुरेखीय होते हैं।

Scanned with CamScanner

(7) उद्विकासीय विचारधारानुसार सामाजिक परिवर्तन आंतरिक शक्तियों के कारण होता है किंतु सोरोकिन के अनुसार आंतरिक के साथ-साथ वाह्य शक्तियों का भी महत्व है।

(8) कारक → सामाजिक परिवर्तन के वैसे तो कई कारक हैं जैसे: प्रौद्योगिकीय कारक, सांस्कृतिक कारक, जैवकीय कारक, प्रेस आदि।

(9) वस्तु, भिन्नता एवं समय → सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में वस्तु, समय एवं भिन्नता का होना अवश्य माना गया है।

वस्तु → हमारा तात्पर्य उस वस्तु को स्पष्ट करना होगा जिसमे परिवर्तन हुआ है या होगा अथवा हो रहा है।

समय → समय से हमारा तात्पर्य परिवर्तन के लिए कम से कम दो समय का होना अवश्य ही माना गया है। जैसे परम्परागत औद्योगिक क्षेत्र एवं आधुनिक क्षेत्र। एक परम्परागत तथा दूसरा आधुनिक। अतः स्पष्ट है कि दो समय का होना अत्यंत आवश्यक है।

भिन्नता → भिन्नता से हमारा अर्थ है वस्तु, समय के फलस्वरूप जो भी भिन्नताएँ होंगे वे ही सामाजिक परिवर्तन कहलाएगी।

Dr. S. N. Choudhary
Marwari College
L. N. M. U